जनाब का मुल्काचहार

जनाब, न शाकाहारी हैं और न ही मांसाहारी । वे मुल्काहारी हैं। मुल्कह उनका प्रिय आहार है। खाने में मुल्कच न हो तो वे थाली फेंक देते हैं। मुल्का को पचाने के लिए उनके शरीर में एक मशीन भी फिट है।

फौज में नौकरी मिलने पर आम मुल्कों में सैनिकों की छाती पर तरह-तरह के बिल्ले लगाए जाते हैं। लेकिन ना-पाक फौज के जांबाज जंगजुओं के शरीर में मुल्कु को खाने-पचाने की मशीनें लगाई जाती हैं। जिसके शरीर में यह स्पेमशल मशीन फिट रहती है, वही मुल्कं को खा सकता है। मुल्को को कुतरने के लिए छोटी मशीनें, छोटे सैनिकों को लगाई जातीं हैं। बड़े सैनिकों का पेट बड़ा होता है, इसलिए उनमें बड़ी मशीनें या कहें संयंत्र लगाए जाते हैं। मुल्कु की फौज में बड़े अफसर के रूप में जिस दिन जनाब ने ज्वाइनिंग दी थी, उसी दिन उनके शरीर में भी एक मशीन फिट कर दी गई थी।

जंग ठहर जाने पर मशीन बोल रही थी, ' सुन जनाब ! जंग के मुश्किल और खतरनाक हालातों में मैं काम नहीं कर पाऊंगी। मुझे फौरन फॉरेन के किसी सुकून भरे मुल्कह में ले चल। वहां मैं आराम से रहूँगी और फुरसत से तेरा यहां खाया-पिया पचाऊंगी।' जनाब ने कहा 'मुश्किल की घड़ी में तूने मेरा साथ छोड़ा तो मेरा हाजमा मुश्किल में फंस जाएगा। डॉक्टैर मुझे मुल्काहारी से फलाहारी बना देंगे।'

-' वाह ! तू माल-ए-मुफ्त दिल-ए-बेरहम होकर मुल्कन को खाए, और मैं इस जाहिल मुल्क। में रहकर, तेरे खाए को पाक बनाकर साफ करती रहूँ ? अब ऐसा नहीं होगा। अपने खाए-खुए को पचाने के लिए मुझे सुकून भरे किसी फॉरेन मुल्कह में भेजना होगा। वहां मैं ऑनलाईन तेरा पाचन-तंत्र सम्हालूंगी।' मशीन ने फाइनल फैसला सुनाया।

जंग के माहौल में जनाब, मुल्कह को सुपाच्चे दलिया-खिचड़ी बनाकर जीम रहे थे। ऐसे में मुल्कांहार को पचाने के लिए मशीन की ज्या'दा जरूरत नहीं थी। इसलिए उन्होंलने मशीन को अपने शरीर से अलग किया और फॉरेन जा रही अपनी फेमिली के साथ, मुल्को के बाहर भेज दिया। अब मशीन ऑनलाइन, उनके खाए को पचा रही है।

डॉ. प्रदीप मिश्र
9827063496

कर्नल सोफिया कुरैशी पर विवादित बयान के बाद भाजपा लगी डैमेज कंट्रोल करने, बीजेपी नेता पहुंचे सोफिया के घर बताया 'देश की बेटी'

इंदौर । मध्य प्रदेश की मोहन सरकार के मंत्री विजय शाह के कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर दिए गए विवादित बयान के बाद सियासी घमासान मचा हुआ है। कांग्रेस के तीखे विरोध और इस्तीफे की मांग के बीच अब भारतीय जनता पार्टी डैमेज कंट्रोल मोड में आ गई है।

बीजेपी नेताओं का एक प्रतिनिधिमंडल प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा का संदेश लेकर कर्नल सोफिया के छतरपुर स्थित निवास पर पहुंचा और उन्हें देश की बेटी बताते हुए सम्मान प्रकट किया है।

पूर्व विधायक मानवेंद्र सिंह के नेतृत्व में पहुंचे नेताओं ने कर्नल सोफिया कुरैशी और उनके परिजनों से मुलाकात की।

इस दौरान उन्होंने भरोसा दिलाया कि पार्टी उनके सम्मान में कोई कमी नहीं छोड़ेगी। यह पहल मंत्री विजय शाह के बयान के बाद बढ़ते राजनीतिक दबाव को कम करने की कोशिश के तौर पर देखी जा रही है।

इससे पहले मंत्री विजय शाह ने अपने बयान पर माफी मांग ली और सफाई दी कि प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा तथा संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा से मुलाकात कर अपना पक्ष रखा। लेकिन बीजेपी आलाकमान शाह के बयान से नाखुश बताया जा रहा है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पटवारी ने सेना का अपमान बताया

कांग्रेस इस मुद्दे को लेकर आक्रामक है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने इसे बेहद गैर-जिम्मेदाराना और सेना का अपमान बताया।

उन्होंने कहा, जब पूरा देश आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है, तब बीजेपी का मंत्री ऐसी नफरत फैलाने वाली बात कहता है। प्रधानमंत्री सेना को सलाम करते हैं और उनके मंत्री उल्टे बयान दे रहे हैं। इस बीच प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पटवारी ने मांग की है कि विजय शाह को तत्काल मंत्री पद से हटाया जाए और बीजेपी यह स्पष्ट करे कि यह बयान उनकी निजी सोच थी या पार्टी की लाइन। साथ ही मुख्यमंत्री मोहन यादव से भी इस संबंध में कार्रवाई की अपील की है।

यहां बताते चलें कि कर्नल सोफिया कुरैशी देश की पहली महिला अधिकारी हैं, जिन्होंने एक अंतरराष्ट्रीय सैन्य दल का नेतृत्व किया है। उनके सम्मान को लेकर उठे इस विवाद ने ना सिर्फ राजनीतिक माहौल गर्म किया है, बल्कि सेना से जुड़े विषयों को लेकर सार्वजनिक संवेदनशीलता को भी उजागर किया है।

युवा कांग्रेस में प्रदेश अध्यक्ष पद पर महाकौशल का दावा

दो प्रमुख पद मालवा और प. निमाड़ के पास होने से नहीं बची इस क्षेत्र की संभावना

इंदौर । मप्र में युवा कांग्रेस के चुनाव में नया मोड़ आ गया है। कांग्रेस के इस प्रमुख संगठन के प्रदेश अध्यक्ष के पद पर महाकौशल से मजबूत दावा हो गया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के दो प्रमुख पद मालवा व पश्चिम निमाड़ के पास होने के कारण इस क्षेत्र का युवा कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर दावा कमजोर हो गया है।

युवा कांग्रेस के चुनाव में तेज गति के साथ परिवर्तन हो रहे हैं। बड़े नेता भी अपने समर्थकों को मैदान में उतारने के लिए आगे आ रहे हैं। युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष का पद महत्वपूर्ण पद माना जाता है। इस पद पर अब सबसे बड़ा दावा महाकौशल से आया है।

जबलपुर के कांग्रेस के विधायक लखन घनघोरिया द्वारा अपने बेटे को युवा कांग्रेस का प्रदेश अध्यक्ष बनाने के लिए मोर्चा संभाल लिया गया है। कांग्रेस की राजनीति में उन्हें महाकौशल का बड़ा नेता माना जाता है। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ से लेकर उमंग सिंगार, सज्जनसिंह वर्मा तक सभी घनघोरिया के समर्थन में लामबंद हो गए हैं।

दिग्विजय ने बनाई दूरी

प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने युवा कांग्रेस के चुनाव से अभी तक दूरी बनाकर रखी है। पिछली बार विक्रांत भूरिया के रूप में राजा ने प्रदेश अध्यक्ष पद पर अपना प्रत्याशी उतारा था। इस बार जो लोग प्रदेश अध्यक्ष बनने के लिए ताकत लगा रहे हैं उनमें दिग्गी राजा का सीधा समर्थक कोई नहीं है।

इस स्थिति के चलते राजा भी इस चुनाव से पर्याप्त दूरी बनाकर रख रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने युवा कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए अपने पत्ते अभी नहीं खोले हैं। अभी तक उनके द्वारा यह घोषणा नहीं की गई है कि उनका प्रत्याशी कौन होगा। इसके साथ ही जो प्रत्याशी सामने आ रहे हैं उनमें से किसी के भी नाम का उनकी ओर से विरोध नहीं हो रहा है। ऐसे में अब आने वाले समय में ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि पटवारी का हाथ किसके साथ है।

राजनीति खींचतान में बच गई वीडी की कुर्सी...

इंदौर (नगर संवाददाता)। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष का फैसला आखिरकार अभी नहीं हो पाया है। एक बार फिर वीडी की कुर्सी बचती हुई दिख रही है। हालांकि जल्द ही इस फैसले पर मोहर भी लगने वाली है, जिसके बाद नए राजनीतिक समीकरण बनेंगे।

उल्लेखनीय है कि वीडी शर्मा के अध्यक्ष का कार्यकाल पूरा हो चुका है। माना जा रहा था कि पहले प्रदेश अध्यक्ष का फैसला होगा, उसके बाद शहर अध्यक्ष और दूसरे निर्णय लिए जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया और आखिरकार कहानी उलझ गई।

जिस तरीके से राजनैतिक माहौल बनता दिख रहा था, उससे लग रहा था कि जल्द ही फैसला हो जाएगा, लेकिन पाकिस्तान पर किए हमले के कारण दिल्ली में दिग्गजों की व्यस्तता बढ़ गई थी। अब हालात सामान्य हो गए हैं, इसलिए प्रदेश अध्यक्ष के लिए फिर एक बार उठा-पटक तेज हो गई है। पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा, अरविंद भदौरिया, सांसद फग्गनसिंह कुलस्ते, राज्यसभा सांसद सुमरसिंह सोलंकी और बैतूल के विधायक हेमंत खंडेलवाल का नाम सबसे आगे दिख रहा है।

ये माना जा रहा है कि वीडी शर्मा को अगर प्रदेश अध्यक्ष से हटाया तो उन्हें केंद्र में नई जिम्मेदारी मिल सकती है। या तो संगठन में उन्हें जगह मिलेगी। इतना ही नहीं, किसी बड़े पद पर पहुंचाया जा सकता है।

हालांकि अभी जिस तरीके से राजनैतिक हालात बने हुए हैं, उससे वीडी की कुर्सी तो बच गई है, लेकिन किसी नए चेहरे पर दांव लगाने की बातें भी हो रही हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष का फैसला भी जल्द ही होना है। सुमरसिंह आदिवासी समुदाय में मजबूत पकड़ रखते हैं, इसलिए उनका नाम सुर्खियों में है।

नरोत्तम मिश्रा ब्राह्मण कोटे से हैं और विधानसभा चुनाव हारने के बाद महाराष्ट्र में उन्हें बड़ी जिम्मेदारी दी थी, जहां पर भाजपा को बहुमत मिला है, जबकि हालात बदले हुए थे। पूर्व मंत्री अरविंद भदौरिया क्षत्रीय समाज से आते हैं और केंद्रीय नेतृत्व भी उन्हें पसंद करता है। हेमंत खंडेलवाल के नाम पर इसलिए चर्चा हो रही है,क्योंकि उन्होंने संगठन में अच्छा काम किया है।

फग्गनसिंह कुलस्ते भी इस दौड़ में शामिल हैं, जिससे लग रहा है कि किसी भी लाटरी लग सकती है। हालांकि नए नाम पर विचार विमर्श किया जा रहा है। अभी तो फिलहाल वीडी शर्मा की कुर्सी को लेकर हालात सामान्य हैं, लेकिन जिस तरीके से माहौल दिख रहा है, उससे लग रहा है कभी भी फैसला हो सकता है।

कटाक्ष

ग़ज़ल

मदारी का ऐसा कोतुक दिखाया है क़लंदर ने,
हंसाया है रूलाया है सताया है क़लंदर ने।
उस की इक डुगडुगी अन्दर नशा मदहोश करने का,
कि बंदर रीछ क्या बंदा नचाया है क़लंदर ने।
कि पहले मार दिया उस को लहू लुहान हालत में,
तो फिर चुरलू से बंदे को उठाया है क़लंदर ने।
यह सारा झूठ सा है खेल परन्तु सच ही लगता है,
खुदा को भी ब्रह्मांड से बुलाया है क़लंदर ने।
जबरदस्ती तशद्द और लालच से मुहोब्बत से,
कैसे फिर रीछ बंदर को सिखाया है क़लंदर ने।
हवा भीतर धड़ा-धड़ पैसों की बरसात हो जाती,
कि लोगों को कैसे मूर्ख बनाया है क़लंदर ने।
अगर कुछ दान दोगे तो इसे मैं जिन्दा कर दूंगा,
मृत बच्चे को हाथों में उठाया है क़लंदर ने।
युगांतर से ही इस के साथ इक रिश्ता है लोगों का,
कैसे सच झूठ का सिक्का चलाया है क़लंदर ने।
छूपा के कपड़े में बच्चा उस की गर्दन घुमा दी है,
घड़ी पल चैन सब का ही चुराया है क़लंदर ने।
बेशक यह सच नहीं फिर भी इसे सच मान लेते हैं,
कबूतर से कैसे चूहा बनाया है क़लंदर ने।
कैसे बुद्ध बना कर रोटियों को सेंक लेता है,
सम्मोहित करने का जुमला रचाया है क़लंदर ने।
कैसे चुरलू एंव बंदर रीछ शिष्टाचार में रखना,
कि अपनी अगली पीढ़ी को सिखाया है क़लंदर ने।
यह नव पीढ़ी हक़ीक़त को समझ चुकी है बालम जी,
क्यों कैसे कहा कब तक रूलाया है क़लंदर ने।

बलविन्दर बालम गुरदासपुर
ओंकार नगर गुरदासपुर पंजाब
मों - 9815625409

घोषणा के बाद भी भर्ती प्रक्रिया अधर में

स्वास्थ्य विभाग में डॉक्टर्स और स्टाफ की कमी

इंदौर। मप्र में विशेषज्ञ चिकित्सकों, पैरामेडिकल स्टाफ और कर्मचारियों की कमी के कारण स्वास्थ्य व्यवस्थाएं चरमरा रही है। इसको देखते हुए सरकार ने स्वास्थ्य विभाग में बड़े स्तर पर भर्तियां करने की घोषणा की थी। लेकिन विडंबना यह है कि घोषणा के करीब सालभर बाद भी भर्ती प्रक्रिया अधर में है। वहीं दूसरी तरफ साल दर साल प्रदेश के सरकारी अस्पतालों में मरीजों की संख्या बढ़ रही है।

अस्पतालों में मरीजों की संख्या के अनुपात में डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ नहीं होने से मरीजों को समय पर इलाज नहीं मिल पाता। इससे कई बार मरीजों को मजबूरी में प्रायवेट अस्पतालों में जाना पड़ता है।

गौरतलब है कि सरकार ने पिछले साल जून में स्वास्थ्य विभाग में 46 हजार से ज्यादा कर्मचारियों, पैरामेडिकल स्टाफ और विशेषज्ञ चिकित्सकों की भर्ती का निर्णय लिया था। सालभर होने को है, लेकिन अब तक सिर्फ एक भर्ती परीक्षा हो पाई है। डिप्टी सीएम एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ला कैबिनेट के फैसले के बाद से हर हफ्ते-पंद्रह दिन में विभागीय बैठकों में भर्ती प्रक्रिया की समीक्षा कर अधिकारियों को समयबद्ध ढंग से भर्ती प्रक्रिया पूरी करने के निर्देश देते हैं। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का कहना है कि भर्ती की प्रक्रिया चल रही है। जल्द ही कर्मचारी चयन मंडल और मप्र लोक सेवा आयोग भर्ती परीक्षा आयोजित करेगा। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री राजेंद्र शुक्ला का कहना है कि भर्ती की प्रक्रिया जारी है। कर्मचारियों की भर्ती चरणबद्ध ढंग से की जाएगी। दस हजार कर्मचारियों की भर्ती के लिए कर्मचारी चयन मंडल को प्रस्ताव भेजा जा चुका है। इसके अलावा 350 डॉक्टरों की भर्ती के लिए एमपी-पीएससी विज्ञापन जारी कर चुका है।

विधानसभा में भी गरमाता रहता है मुद्दा

विधानसभा में सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायक अस्पतालों में डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ की कमी का मुद्दा उठाते रहते हैं। गत मार्च में हुए विधानसभा के बजट सत्र में भाजपा विधायक रीति पाठक ने अपनी ही सरकार को घेरते हुए कहा था, हमारे सीधी के जिला चिकित्सालय में 36 स्वीकृत पदों में से केवल 12 पदों पर विशेषज्ञ डॉक्टर काम कर रहे हैं, जबकि 24 पद रिक्त हैं।

ऐसे में अस्पताल कैसे चलेगा? उन्होंने कहा था कि सीधी जिला एक आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है और यहां स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति बहुत गंभीर है। अस्पतालों में कर्मचारियों और पैरामेडिकल स्टाफ की कमी पूरी करने के लिए डॉ. मोहन यादव कैबिनेट ने पिछले साल 11 जून को स्वास्थ्य विभाग में 46 हजार 491 नए पदों का सृजन कर उन पर भर्ती के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। प्रस्ताव के अनुसार अस्पतालों में पैरामेडिकल स्टाफ, तृतीय श्रेणी और चतुर्थ श्रेणी की भर्ती की जानी है।

स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ल ने सदन में बताया कि प्रधानमंत्री ने देश में 75 हजार मेडिकल की नई सीट बढ़ाने का निर्णय लिया है। मध्य प्रदेश में भी 5 से 7 हजार तक एमबीबीएस की सीट बढ़ेंगी। यहां मैनपावर की कमी को दूर करने के लिए सरकार 3900 पदों पर पीएससी के माध्यम से डॉक्टरों की नई भर्ती करने जा रही है। इसके साथ ही 4300 पदों पर पैरामेडिकल स्टाफ की भर्ती की जाएगी। करीब 16000 पद आउटसोर्स के माध्यम से भी भरे जाएंगे। इधर सदन में कांग्रेस के जनप्रतिनिधियों ने आउटसोर्सिंग की भर्ती में आरक्षण नियम न लागू होने का मुद्दा उठाया। कांग्रेस विधायकों का कहना था कि आउटसोर्स की जो भर्ती हो रही है, उसमें भी सभी जाति वर्ग को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

कैबिनेट में भी लिया गया भर्ती का निर्णय

कैबिनेट बैठक में निर्णय लिया गया था कि इनमें से 18,653 पदों की पूर्ति 3 वर्ष में की जाएगी। शेष 27,828 पदों की पूर्ति राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के माध्यम से होगी। इसके अलावा कैबिनेट में विशेषज्ञ चिकित्सकों के रिक्त पड़े 1214 पदों में से 607 पद सीधी भर्ती से भरने और शेष पद मप्र लोक सेवा आयोग के माध्यम से भरने का निर्णय लिया गया था। कर्मचारी चयन मंडल ने फरवरी में नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टाफ के 2267 पदों पर भर्ती के लिए परीक्षा आयोजित की थी।

इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग में भर्ती के लिए अन्य कोई परीक्षा नहीं हुई। सरकार ने पिछले साल जुलाई में आने वाले पांच साल में ढाई लाख पदों पर भर्ती का निर्णय लिया था। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गत नवंबर में अफसरों को निर्देश दिए थे कि दिसंबर, 2024 तक एक लाख पदों पर भर्ती की प्रक्रिया शुरू की जाए।

इसके बाद से अब तक कर्मचारी चयन मंडल ने सिर्फ तीन विभागों स्वास्थ्य, महिला-बाल विकास एवं तकनीकी शिक्षा विभाग में रिक्त पदों पर भर्ती के लिए परीक्षाएं आयोजित कराई हैं। मप्र सरकार ने नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं को आकांक्षी युवा नाम दिया है, लेकिन विधानसभा के बजट सत्र में बेरोजगारी से संबंधित सवाल के जवाब के मुताबिक, सरकार के पास बेरोजगारों की कोई आधिकारिक जानकारी नहीं है। हालांकि प्रदेश के रोजगार पोर्टल पर नौकरी के लिए रजिस्ट्रेशन कराने वाले युवा ही सरकार की नजर में नौकरी के आकांक्षी हैं। मार्च, 2025 की स्थिति में रोजगार पोर्टल पर 29 लाख से अधिक बेरोजगार युवा रजिस्टर्ड है।